वैष्णव जन
वैष्णव जन तो तेने कहीए, जे पीड पराई जाणे रे,
परदुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे। ॥ ध्रु० ॥
सकल लोक मा सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे। १
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे,
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे। २
मोह माया व्यापे नहिं जेने, दृढ वैराग्य जेना मन मा रे,
रामनामशु ताली लागी, सकल तीरथ तेना तन मा रे। ३
वणलोभी ने कपटरहित छे, काम क्रोध निवार्या रे,
भणे नरसैयो तेनु दरसन करता, कुल एकोतेर तार्या रे। ४
जन्म
मृत्यु
२ अकतूबर १८६९ : ३० जनवरी १९४८
एकला चलो रे
यदि तोर डाक सुने केउ न आसे, तबे एकला चलो रे,
एकला चलो, एकला चलो, एकला चलो रे।
यदि केउ कथा न कय, ओरे, ओरे, ओ अभागा!
यदि सबाइ थाके मुख फिराये, सबाइ करे भय—तबे परान खुले
ओ तुइ मुख फुटे तोर मनेर कथा एकला बलो रे।
यदि सबाइ फिर जाय, ओरे, ओरे, ओ अभागा!
यदि गहन पथे जाबार काले केउ फिरे ना चाय—तबे पथरे काटा
ओ, तुइ रक्त माखा चरन तले एकला दलो रे।
यदि आलो ना धरे, ओरे, ओरे, ओ अभागा!
यदि झड-बादले आंधार राते दुआर देय घरे—तबे बज्रानले
आपन बुकेर पाजर ज्वालिये निये एकला जलो रे।
—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

बापुके आशीर्वाद

(रोज़ के विचार)

२०-११-४४ : १०-४-४५

१

मो० क० गांधी

विद्या को

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

ॐ राम

दो शब्द

एक पवित्र आत्मा की स्मृति में और एक बिछुड़ी हुई आत्मा के संतोष के लिये बापू ने यह "रोज़ के विचार" लिखने आरंभ किये। दोनों की बापू बहुत क़द्र करते थे। अपने "रोज़ के विचार" लिखने के क्रम को उन्होंने बिरले ही तोड़ा।

विद्या (जिसकी स्मृति में यह विचार लिखे गये हैं) की जन्मपत्री में उसे "ऋषिकन्या" के नाम से ही संबोधन किया गया था। बापू उसे बड़ी साध्वी मानते थे। मुझे अपने जीवन में ऐसी आत्माओं का परिचय शायद ही हुआ हो।

मुझे खेद है कि विद्या के पवित्र जीवन से हम पूरा लाभ न उठा सके। परन्तु उसकी स्मृति में बापू के लिखे हुए यह "रोज़ के विचार" भी शिक्षा के सागर हैं। कैसा अच्छा हो यदि इस सागर में से मोती चुन कर हम अपना जीवन सफल करें!

१ यार्क प्लेस, नई दिल्ली
२० अगस्त, १९४८

जैरामदास दौलतराम

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

सबको सन्मति दे भगवान

भूमिका

२० जुलाई, १९४३ को मेरी धर्मपत्नी विद्या की अकाल मृत्यु होने पर मैं स्वभावतः बहुत उदास रहता था। एक बापू ही थे जो मेरे दुखी मन को आश्वासन दे सकते थे। लेकिन वह उस समय आग़ाखां महल, पूना में नज़रबन्द थे। जब बापू ६ मई, १९४४ को छूटे तब मेरा उनके साथ कुछ पत्र-व्यवहार चला। यद्यपि वह कहते थे कि ईश्वर ही हमारा निरंतर साथी है तो भी मैं अपने को अकेला और उदास समझता रहा। २ जून, १९४४ वाले एक पत्र में उन्होंने लिखा :

"तुम्हें अब शोक करना छोड़ देना चाहिये। जो कुछ तुमने पढ़ा और पचाया है, उस सब से सहारा लो। एक सच्चा विचार भेजता हूं जो कि मुझे एक बहन ने भेजा है। उसे अंतर में उतार लो। विद्या मरी नहीं है। वह तो अपना शरीर, जिसमें वह निवास करती थी, यहाँ छोड़कर चली गई है, और उसने अपने योग्य दूसरा शरीर धारण कर लिया है।"

और इस ख़त के साथ-साथ बापू ने अंग्रेज़ी में छपा हुआ वह 'सच्चा विचार' भी भेज दिया था जो कि उन्हें पूज्य कस्तूरबा की मृत्यु पर एक पश्चिमी महिला, श्रीमती ग्लेन० ई० स्नाईडर, ने ग्राईम्स (अमेरिका) से आश्वासन देने के लिये भेजा था :

"यह ठीक नहीं, ऐसा मत कहो
कि वह मर गई है। वह सिर्फ़ हमसे दूर चली गई है !
प्रसन्नतापूर्वक मुसकान के साथ,
विदाई का संकेत करते हुए
वह एक अनजाने देश में चली गई है,
और हमें यह कल्पना करते हुए छोड़ गई है
कि कितना सुंदर वह देश होगा जहाँ उसने बसना पसन्द किया है !
यह समझो कि उसे वहाँ भी वैसा ही प्रेम प्राप्त है
जैसा कि उसे यहाँ प्राप्त था;
यह समझो कि वह अब भी वैसी ही है, और कहो—
वह मरी नहीं, सिर्फ़ हमसे दूर चली गई है !"

फिर २० जून, १९४४ को एक पत्र में बापू ने लिखा :

"विद्या की मृत्यु पर तुम हर समय विचार न किया करो और न विचलित ही हो। यदि ज़िंदा रहते हुए वह तुम्हारे जीवन में प्रेरणा देती थी, तो अब, जब कि वह अपने विश्रामघर गई है, और भी अधिक

प्रेरणा तुमको उससे मिलनी चाहिये। मेरी समझ में तो आत्माओं के सच्चे ऐक्य का यही अर्थ है। इसका अत्युत्तम उदाहरण ईसा का है, और आधुनिक काल में रामकृष्ण परमहंस का। मरने के बाद वे और भी प्रभावशाली बने। उनकी आत्मा कभी मरी नहीं और ऐसे ही विद्या की भी आत्मा नहीं मरी है। इसलिये तुम्हें शोक करना अवश्य छोड़ देना चाहिये, और सामने आनेवाले कर्त्तव्य का ही विचार करना चाहिये।"

फिर १९ जुलाई, १९४४ को एक पत्र में उन्होंने लिखा :

"विद्या बड़ी साध्वी थी। उसका हृदय सुनहरी था। उसकी त्याग की इच्छा बड़ी थी। उसका प्रेम समुद्र-सा था। तुमको उसके लायक़ बनना है।"

इस प्रकार पत्र-व्यवहार द्वारा बापू मुझे शांति-पाठ सिखाते रहे। जब ३० सितंबर, १९४४ को वह सेवाग्राम आश्रम गये तो मैं भी वहाँ पहुँच गया। वहाँ रोज़ प्रातःकाल की प्रार्थना के बाद मैं बापू के पास जाकर अपने मन का बोझ हलका करता था। बापू करुणा के सागर थे। वह इतने अधिक कार्यव्यस्त होते हुए भी हर रोज समय निकालकर न केवल मुझे धैर्य देते बल्कि कुछ न कुछ उपदेश लिख भी देते थे, ताकि मैं उसपर विचार करके अपने मन पर क़ाबू पाने का प्रयत्न करूँ। १३ अक्टूबर, १९४४ से १५ दिन तक बापू लगातार ऐसे ही लिखते रहे और उसके बाद कभी कभी। भूमिका में ये सब विचार देना काफ़ी कठिन है, अतः सिर्फ़ कुछ दिनों के ही विचार यहाँ दिये जाते हैं :

"जो सिर्फ़ ईश्वर का सहारा लेते हैं, वे मनुष्य का सहारा नहीं लेंगे, चाहे वे मरे हों चाहे ज़िंदा। यदि तुमने इसे पचा लिया, तो तुम कभी शोक नहीं करोगे।"

१३-१०-४४

"तुम 'ट्राइ अगेन' ('फिर से कोशिश करो') वाली कविता जानते हो ? दुःख से लाचार बनने की तुमको इजाज़त नहीं है। दूसरा सब भरोसा निकम्मा है, एक ईश्वर पर ही विश्वास रखो। विद्या की मौत से यही शिक्षा मिलती है। तुम्हारे प्रेम की परीक्षा हो रही है।"

१४-१०-४४

"ईश्वर की कृपा ईश्वर का काम करने से आती है। तुमको ईश्वर का काम करना है। कभी चरख़ा चलाता है ? चरख़ा चलाना सब से बड़ा यज्ञ है। रोते रोते भी चरख़ा चलाओ।"

१५-१०-४४

"शांति में, सुख में तो सबकुछ होता है। चरख़ा दुःखी का, भूखों का सहारा है। दुःख में तो छूटना ही नहीं चाहिये।"

१६-१०-४४

"तुम्हें अपनी दिनचर्या ऐसी बना लेनी चाहिये कि एक क्षण भी फ़ुरसत न मिले। यही मृत प्रियजनों

के प्रति सच्चा प्रेम है। अंग्रेजों को देखो। वे भी अपने प्रियजनों को प्यार करते हैं, लेकिन जब वे प्रियजनों से जुदा होते हैं तो और भी अधिक अपने को सेवाकार्य में समर्पण कर देते हैं।"

१७-१०-४४

"मुए ज़िंदों को कुछ भेजते हैं, उसका हमें पता नहीं चलता है; लेकिन ज़िंदे मुओं को भेजते हैं, यह निःसंदेह है। इसलिये हम उनके पीछे कभी न रोयें।"

"ईश्वर-कृपा (Grace) ईश्वर का काम करने से आती है। ईश्वर के काम शरीर से, मन से, वाणी से, दुःखी की सेवा करने से होते हैं।"

१८-१०-४४

"ऐसा सोचो कि ग़रीब आदमी तुम्हारी हालत में क्या कर सकता है। उसकी पत्नी मर जाय, तो वह दुगुना काम करेगा। वह भी ईश्वर का भक्त है। भीतर का आनंद ईश्वर का काम करने से ही पैदा होता है। हम सब अपने को ग़रीब की हालत में रख दें। बहरेपन को ईश्वर की बख़शीश समझो। एक क्षण भी बग़ैर काम के रहना ईश्वर की चोरी समझो। मैं दूसरा कोई रास्ता भीतरी या बाहरी आनंद का नहीं जानता हूँ।"

"सबसे अच्छा तरीक़ा तुम्हारे लिये २० ता० मनाने का तो यह है कि तुम सारा दिन सूत कातते रहो,

या अपनी रुचि के अनुसार आश्रम के कोई भी काम में लगे रहो, और उसके साथ रामनाम को जोड़ दो।"

"(ग़रीबों को खिलाना) बिलकुल ग़ैरजरूरी है। जिन्हें सचमुच ज़रूरत हो, उन्हें तुम भले ही कुछ दे सकते हो।"

१९-१०-४४

"आज का दिन तुम्हारे लिये शुभ दिन है। विद्या को मैंने काफ़ी रुलाया था। वह तुम्हारे जैसे रो देती थी और कहती थी: 'भगवान बताओ'। मैंने उसे डाँटा और कहा: 'भगवान को चरखे में देखेगी।' आखिर समझ गई।"

"हम यंत्र हैं और यांत्री भी। शरीर यंत्र है, आत्मा यात्री। आज तुम्हें इस यंत्र से यंत्रवत् काम लेना है और मुझे हिसाब देना है।"

२०-१०-४४

"मनुष्य जिसका ध्यान करता है, उसके मारफ़त ईश्वर को निश्चित देखता है। चरखा सबसे अच्छा प्रतीक है, और उसका दृश्यफल भी है।"

"मनुष्य को मनुष्य का सहारा चाहिये, इसलिये तो आश्रम वग़ैरा संस्थायें रहती हैं। मनुष्य का सहारा सान्निध्य से ही होता है, ऐसा नहीं है। कोई डाक द्वारा करते हैं, कोई सिर्फ़ विचार से, कोई मरे हुए

के सद्वचनों से, जैसे हम तुलसीदास से रोज़ मिलते हैं।"

२१-१०-४४

"आशा अमर है। उसकी आराधना कभी निष्फल नहीं होती।"

२२-१०-४४

"मेरे पास बैठने में कोई हानि नहीं है, लेकिन ऐसे वक्त पर, जैसे महादेव करता था और कृपालाणी, तकली चलाना। पीछे ईश्वर के समय की चोरी नहीं होगी। तकली हमारा मूक मित्र है। कुछ आवाज़ ही नहीं करती, और जगत के लिये जो धागा चाहिये उसे निकालती रहती है। तकली चलाते समय हम सबकुछ देख सकते हैं और सुन सकते हैं। मैं तो यहाँ तक जाता हूँ कि ईश्वर-कृपा होगी तो इस तरह कर्म में जुते हुए रहने से कान भी खुल जाय। लेकिन जब इस तरह कर्मयोगी बनोगे, तब कान की परवाह थोड़ी रहेगी। वानर-गुरु तो जान-बूझ कर कान बंद करता है, योंकि आसपास की आवाज़ उसके रास्ते में रुकावट डालती है।"

२३-१०-४४

"मेरी शांति और मेरे विनोद का रहस्य है मेरी ईश्वर, यानी सत्य पर अचल श्रद्धा। मैं जानता हूँ कि मैं कुछ कर नहीं सकता हूँ। मुझ में ईश्वर है, वह मुझसे सबकुछ कराता है, तो मैं कैसे दुःखी हो सकता

हूँ ? यह भी जानता हूँ कि जो कुछ मुझसे कराता है, मेरे भले के ही लिये है। इस ज्ञान से भी मुझे खुश रहना चाहिये। 'बा' को ईश्वर ले गया सो 'बा' के भले के लिये। इसलिये 'बा' का वियोग मुझे दुःख देने वाला नहीं होना चाहिये। इस वास्ते विद्या की मृत्यु से तुम्हारा दुःख मानना पाप समझो।"

२४-१०-४४

"शारीरिक काम ज्यादा करो। पढ़ने का, पढ़ाने का अवश्य करो, लेकिन तकली, चरखा पर खूब काम करो। भाजी साफ़ करो, आश्रम के काम में हिस्सा लो और सब काम करने में ईश्वर के दर्शन करो, क्योंकि ईश्वर सब में भरा है।"

२५-१०-४४

"मेरे लेखों में से जो निकालना है सो निकालो। यह काम अच्छा है। लेकिन शारीरिक परिश्रम खूब उठाना चाहिये। विद्या का स्मरण करना और रोना बहुत हानिकर है। वह स्मरण अच्छा है जो आत्मा को ऊँचे चढ़ाता है, जागृत करता है। आत्मा का स्वरूप सत् (सत्य), चित् (ज्ञान हृदय से मिला हुआ, अनुभवसिद्ध) और आनंद है। आनंद में दोनों की परीक्षा है—आनंद भीतर का, जो बाहर में देखने में आता है।"

२८-१०-४४

"सब ईश्वर करता है और वह जो करता है वह अच्छे के ही लिये है, ऐसा समझ कर आनंद में रहो।"

१३-११-४४

"रोना हंसना दिल में से निकलता है। (मनुष्य) दुःख मान कर रोता है। उसी दुःख को सुख मान कर हंसता है। इसलिये ही रामनाम का सहारा चाहिये। सब उनको अर्पण करना तो आनंद ही आनंद है।"

१६-११-४४

इस प्रकार बापू से मुझे रोज़ बराबर दो महीने तक प्रबोध मिलता रहा। बाद में जब उन्होंने मुझे क़ुदरती इलाज के लिये प्राकृतिक आश्रम, भीमावरम्, भेजने का निर्णय किया तब मेरे मन में एक विचार उठा कि कैसा अच्छा हो यदि बापू मेरे लिये हर रोज़ कुछ न कुछ वैसे ही लिखते रहें। बापू के सामने जब मैंने यह बात रखी तो उन्होंने आख़िर स्वीकार कर ली और इस प्रकार बापू के ये "रोज़ के विचार" लिखना आरंभ हुए।

बापू से फिर मेरा मिलना पूना, में जून १९४६ में हुआ। जब मैंने उनसे इन विचारों को छपवाने की आज्ञा माँगी तो उन्होंने कहा: "इनमें धरा ही क्या है, जो तुम छपवाना चाहते हो? यदि छपवाना ही है तो मेरे मरने के बाद छपवाना। अभी क्या जल्दी है? कौन जानता है कि जो कुछ मैं आज लिख रहा हूँ,

उसपर मैं आखिर दम तक टिक सकूंगा। यदि टिक सका तब तो छपवाना ठीक होगा, नहीं तो नहीं।"

बापू ने लिखने का यह सिलसिला लगभग २ साल तक जारी रखा, और अंत में जब नवाखाली की दुर्घटनाओं के कारण उनका मन अति उद्विग्न हो गया और इसी कारण उन्होंने 'हरिजन' के लिये लिखना तथा अन्य पत्र-व्यवहार करना वग़ैरह छोड़ दिया और अपना मन केवल देश की स्थिति सुधारने में लगाया, तब उसी समय से उन्होंने विचार लिखना भी बंद कर दिया।

इन विचारों की जो अपनी सुगंधि है, वह सदा के लिये बापू की याद को जागृत रखनेवाली है। यह 'विचार' एक ऐसे व्यक्ति के हैं, जिसने अपने जीवन में बराबर उन पर अमल करने का प्रयत्न किया है। बापू के जीवन भर की अमर साधना इनके पीछे है। इस कारण इन विचारों का मूल्य हमारे अंकन से परे हो जाता है।

जहाँ तक मेरा सवाल है, यह 'विचार' मुझे सदा सदा सत्प्रेरणा देते रहेंगे। और यदि मैं अपने जीवन में इन पर कुछ अंशों में भी चल सका, तो अपना अहोभाग्य मानूंगा। इन्हें अपने ही लिये सुरक्षित रखना मेरे लिये एक तरह की कृपणता होगी। यदि मुझ जैसे दूसरे राहियों को इनसे कुछ सांत्वना मिल सके, तो यह मेरे लिये परम संतोष की बात होगी।

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

पुस्तक का शीर्षक चुनने का स्पष्ट कारण है। बापू के इन विचारों को मैं अपने लिये आशीर्वाद के रूप में मानता हूँ। मुझे तनिक भी संदेह नहीं है कि औरों के लिये भी यह ऐसे ही सिद्ध होंगे।

७ एडमान्स्टन रोड, इलाहाबाद
१८ मार्च, १९६४

आनंद हिंगोरानी

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापू के आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
बापुके आशीर्वाद
(रोज़ के विचार)
१
मो. क. गांधी
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ राम
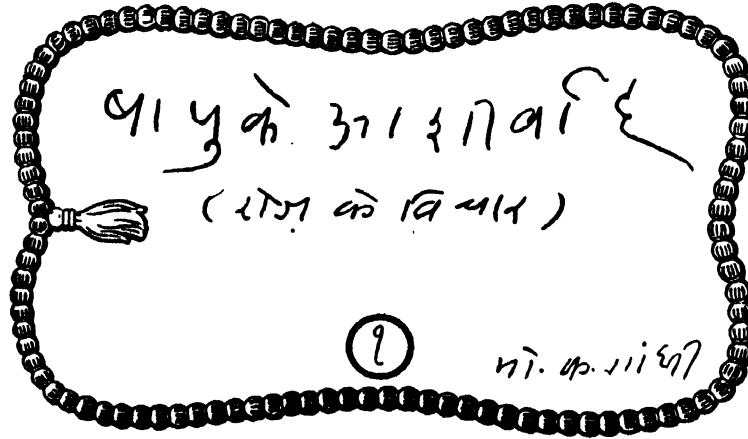
पतित पावन सीताराम

ईश्वरके नाम तो अनेक हैं.
लेकिन
एक ही नाम कहें तो वह है सत्, सत्य.
इसलिये
सत्य ही ईश्वर है.

20-११-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

ईश्वर के नाम तो अनेक हैं
लेकिन एक ही नाम ढूढ़ें
तो वह है सत्, सत्य।
इस लिये सत्य ही
ईश्वर है।

२०-११-४४

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

सत्यके दर्शन बगैर अहिंसाके
हो ही नहीं सकते.
इसीलिये कहता हूं कि
अहिंसा परमोधर्मः

२१-११-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

सत्य के दर्शन बग़ैर अहिंसा के हो
ही नहीं सकते। इसी लिये कहा है
कि अहिंसा परमोधर्मः।

२१-११-४४

रघुपति राघव राजाराम ॐ पतित पावन सीताराम

सत्यकी शोध और अहिंसाका पालन ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, सर्वधर्म समानत्व, अस्पृश्यता निवारण इ. बगैर हो नहीं सकता.

२२-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

सत्य की शोध और अहिंसा का पालन
ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, सर्वधर्म
समानत्व, अस्पृश्यता निवारण इत्यादि
बग़ैर हो नहीं सकता।

२२-११-४४

रघुपति राघव राजाराम ॐ हे राम पतित पावन सीताराम

ब्रह्मचर्य का अर्थ यह है मनसा,
वाचा, कर्मणा इंद्रिय निग्रह है।
जो स्त्रीगमन नहीं करता हुआ
मनसे विकारमय रहता है वह
सच्चा ब्रह्मचारी न माना जाय।

२३-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

ब्रह्मचर्य का अर्थ यहां मनसा, वाचा, कर्मणा इंद्रिय निग्रह है। जो स्त्री गमन नहीं करता हूआ मन से विकारमय रहता है, वह सच्चा ब्रह्मचारी न माना जाय।

२३-११-४४

रघुपति राघव राजाराम — ॐ हे राम — पतित पावन सीताराम

अस्तेय का अर्थ चोरी नहीं करना इतना ही नहीं है. जो वस्तुकी हमें आवश्यकता नहीं है उसे रखना, भी चोरी है. चोरी में हिंसा तो भरी है.

२८-११-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ हे राम

पतित पावन सीताराम

अस्तेय का अर्थ चोरी नहीं करना इतना
ही नहीं है। जो वस्तु की हमें आवश्यकता
नहीं है; उसे रखना, लेना भी चोरी है।
चोरी में हिंसा तो भरी है।

२४-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

अपरिग्रहका मतलब यह है कि
हम कोई चीज़ का संग्रह न करें
जिसकी हमें आज दरकार नहीं है.

२५-११-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान

बापुके आशीर्वाद

अपरिग्रह से मतलब यह है कि हम कोई चीज़ का संग्रह न करें जिसकी हमें आज दरकार नहीं है।

२५-११-४४

ॐ

हे राम

रघुपति राघव राजाराम — पतित पावन सीताराम

आश्रम में सब प्रकार के डर का अभाव
होना चाहिये. मौत का डर, मारपीट का
डर, भूख का डर, अपमान का डर, [illegible] का
डर, भूत प्रेत का डर, किसीके क्रोध का डर —
इन सब और ऐसे डरों से मुक्ति, अभय है.

२६-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — सबको सन्मति दे भगवान

बापुके आशीर्वाद

अभय में सब प्रकार के डर का अभाव होना चाहिये। मोत का डर, मारपीट का डर, भूख का डर, अपमान का डर, लोक-लाज का डर, भूत प्रेत का डर, किसी के क्रोध का डर—इन सब और ऐसे डरों से मुक्ति, अभय है।

२६-११-४४

जैसे हम अपने धर्मको आदर देते हैं
वैसे ही दूसरे धर्मको दें - मात्र सहिष्णुता
पर्याप्त नहीं है।

२७-११-४७

जैसे हम अपने धर्म को आदर देते हैं
ऐसे ही दूसरे धर्म को दें—मात्र सहिष्णुता
पर्याप्त नहीं है ।

२७-११-४४

रघुपति राघव राजाराम

ॐ हे राम

पतित पावन सीताराम

अस्पृश्यता निवारण का मानी हरिजनों को
छूना इतना ही नहीं लेकिन उन को हमारे
रिश्तेदारों जैसे समझना अर्थात् जैसे हमारे
भाई बहनों को वर्तते हैं ऐसे उनको वर्तना.
न कोई ऊंच है न कोई नीच.

२८-११-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

अस्पृश्यता निवारण के मानी हरिजनों
को छूना इतना ही नहीं, लेकिन उनको
हमारे रिश्तेदारों जैसे समझना अर्थात्
जैसे हमारे भाई बहनों से वर्तते हैं ऐसे
ही उनसे वर्तना । न कोई ऊंच हैं, न
कोई नीच ।

२८-११-४४

रघुपति राघव राजाराम — हे राम — पतित पावन सीताराम

योगश्चित्तवृत्ति निरोधः

यह पातंजल योगदर्शनका पहला सूत्र है.
योग चित्तवृत्तिका निरोध है, यानि हमारे दिलमें उठते तरंगों पर अंकुश रखना, उसे दबा देना यह योग हुआ.

२९-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

योगश्चित्तवृत्तिनिरोध :

यह पातंजल योग दर्शन का पहला सूत्र है। योग चित्तवृत्ति का निरोध है, यानी हमारे दिल में उठते तरंगों पर अंकुश रखना, उसे दबा देना, यह योग हूआ।

२९-११-४४

ॐ हे राम

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

जिस के चित्त में तरंग उठते ही रहते हैं
वह सत्य के दर्शन कैसे कर सकता है?
चित्त में तरंग का उठना समुद्र के तुफान
जैसा है. तुफान में जो सुकानी तुफान
पर काबु रख सकता है वह सलामत
रहता है. ऐसे ही चित्त की अशांति
भगवाननाम का आश्रय लेकर वह
जीत जाता है.

३०-११-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

जिस के चित्त में तरंग उठते ही रहते हैं
वह सत्य के दर्शन कैसे कर सकता है।
चित्त में तरंग का उठना समुद्र के तुफ़ान
जैसा है। तुफ़ान में जो सुकानी सुकान
पर काबू रख सकता है वह सलामत रहता
है। ऐसे ही चित्त की अशांति में जो
रामनाम का आश्रय लेता है वह ज़ीत
जाता है।

३०-११-४४

रघुपति राघव राजाराम
हे राम
पतित पावन सीताराम
"वृक्षान्‌की भांति" भगवान भजन करने वाले हैं.
वह नम्रता है और इनको शीतल रहता
है. इन कथा करते हैं!
१-१२-४४
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

“वृक्षन् की मत ले”[1] भजन मनन करने योग्य है। वह तपता है और हमको शीतलता देता है। हम क्या करते हैं?

१-१२-४४

[1]देखिये परिशिष्ट नं० १।

रघुपति राघव राजाराम   ॐ राम   पतित पावन सीताराम

मिथ्याज्ञानवाले हम हमेशां रहते हैं.
मिथ्याज्ञान वह है जो हमको सत्य से
दूर रखता है या करता है.

२-१२-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापुके आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

मिथ्या ज्ञान से हम हमेशा डरते रहें।
मिथ्या ज्ञान वह है जो हमको सत्य से दूर
रखता है या करता है।

२-१२-४४

सत्यके दर्शन के लिये संतोंका
चरित पढ़ना और उनका मनन करना
आवश्यक है.
३-१२-४४

सत्य के दर्शन के लिये संतों का
चरित पढ़ना और उसका मनन
करना आवश्यक है ।

३-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम

ॐ राम

पतित पावन सीताराम

सब भगवान जिस रूपसे कहते हैं वो सब भाषाओंमें विहार करते हैं तो हम किससे वैर करें? (आपका भगवानका अनुवाद)
४-१२-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

जब भगवान् निज मुख से कहते हैं वे सब प्राणी में विहार करते हैं तो हम किस से वैर करें ? (आज के भजन का अनुवाद)[1]

४-१२-४४

[1]देखिये परिशिष्ट नं० २ ।

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

मीराबाईके जीवनमें हम बड़ी बात यह
देखते हैं कि उसने भगवान् के लिये
अपना सब कुछ छोड़ा-पतिभी.

५-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

मीराबाई के जीवन से हम बड़ी बात
यह सीखते हैं कि उसने भगवान् के लिये
अपना सब कुछ छोड़ा—पति भी।

५-१२-४४

ॐ
राम
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
अहंकारी मनुष्य कुछ नहीं कर सकता।
सब कुछ कर सकता है।
६-१२-४४
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
ॐ
हे राम
पतित पावन सीताराम
श्रद्धा से मनुष्य क्या नहीं कर सकता ?
सबकुछ कर सकता है ।
६-१२-४४
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
ॐ राम
पतित पावन सीताराम
श्रद्धावान मनुष्य पहाड़ोंको उल्लंघन करता है।
७-१२-४४
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

श्रद्धा से मनुष्य पहाड़ों को उलंघन
करता है ।

७-१२-४४

ॐ राम

रघुपति राघव राजाराम　　पतित पावन सीताराम

जो मनुष्य किसी एक चीज़ पर एक निष्ठासे काम करता है वह आखिर सब चीज़ करनेकी शक्ति हासिल करेगा.

८-११-४४

बापुके आशीर्वाद

ईश्वर अल्ला तेरे नाम　　सबको सन्मति दे भगवान

जो मनुष्य किसी एक चीज़ पर एकनिष्ठा
से काम करता है वह आखीर सब चीज़
करने की शक्ति हासल करेगा ।

८-१२-४४

सच्चा सुख बाहरसे नहीं मिलता है
अंदरसे ही मिलता है.

९-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम
ॐ हे राम
पतित पावन सीताराम
सच्चा सुख बाहर से नहीं मिलता है,
अंतर से ही मिलता है।
९-१२-४४
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

ॐ
हे राम
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
જિસને અપનાપન ખોયા ઉસને સબ ખોયા.
૧૦-૧૨-૪૪
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

जिसने अपनापन खोया उसने सब खोया ।

१०-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम ॐ पतित पावन सीताराम

सीधा रास्ता जैसा सरल है ऐसा ही कठिन है. ऐसा न होता तो सब सीधा रास्ता ही लेते.

२१-१२-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

सीधा रास्ता जैसा सरल है ऐसा ही कठिन है। ऐसा न होता तो सब सीधा रास्ता ही लेते।

११-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम — पतित पावन सीताराम

"दया धरमका मूल है" ऐसा तुलसीदासजीने कहा है और कहते हैं "तुलसी दया न छांडीये जब लग घट में प्राण." इस वख्त दयाको [illegible] कौन दया करें, कौन किस पर?

१२-१२-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

"दया धरम का मूल है"—ऐसा तुलसीदासजी ने कहा है और कहते हैं : "तुलसी दया न छांड़ीये जब लग घट में प्रान।" हम सब दया के भिक्षुक कैसे दया करें, और किस पर ?

१२-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

एक बहन ने कहा "मैं प्रार्थना करती थी उसको छोड़ दी है।" मैंने पूछा क्यों? उन्होंने उत्तर दिया "क्योंकि मैं दिलको धोखा देती थी।" उत्तर तो ठीक ही है लेकिन धोखा देना छोडे, प्रार्थना क्यों छोडे!

१२-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

एक बहन ने कहा : "मैं प्रार्थना करती थी, अब छोड़ दी है।" मैंने पूछा : "क्यों ?" उसने उत्तर दिया : "क्योंकि मैं दिल को धोका देती थी।" उत्तर तो ठीक ही है लेकिन धोका देना छोड़े, प्रार्थना क्यों छोड़े ?

१३-१२-४४

कल का भजन बहुत मीठा और मननीय था। उसका सार यह है। भगवान् न मंदिर में है, न मस्जीद में; न भीतर है न बाहर; कहीं है तो दीन जनों की भूख और प्यास में है। चलो, हम उनकी भूख और प्यास मिटाने के लिये नित्य कातें या ऐसी जात मेहनत उनके निमित्त रामनाम लेकर करें।

१४-१२-४४

क्या बात है कि हम सामान्यतया भी सहज नहीं
बनते मनोवृत्ति धारण या इरादे के बारे कभी नहीं.
क्या अच्छा यह नहीं होगा कि हम जो वही
धारण करें या आचरण में लिये हुए कार्य जैसा
हमारे दिल में है वैसा ही करें.

२५-११-४४

क्या बात है कि हम सामान्यतया भी झूठ से नहीं बचते भले वह शर्म या डर के मारे क्यों न हो। क्या अच्छा यह नहीं होगा कि हम मौन ही धारण करें या आपस २ में निडर होकर जैसा हमारे दिल में है वैसा ही कहें ?

१५-१२-४४

थोड़ा सा झूठ भी मनुष्य का
नाश करता है जैसे दूध को एक
बूंद ज़हर भी ।

१६-१२-४४

ॐ
हे राम

रघुपति राघव राजाराम   पतित पावन सीताराम

सही चीज़के पीछे वक्त देना इनसानका
स्वभाव है, निकम्मीके पीछे खुवार
होते हैं और दुखी होते हैं!!

१७-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापुके आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

सही चीज़ के पीछे वक्त देना हमको
खटकता है, निक्कमी के पीछे ख़्वार होते
हैं और खुश होते हैं !!!

१७-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम
हे राम
पतित पावन सीताराम

"आदमको खुदा मत कहो, आदम
खुदा नहीं लेकिन खुदाके नूरसे
आदम जुदा नहीं।"
१८-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

"आदम को ख़ुदा मत कहो, आदम ख़ुदा नहीं; लेकिन ख़ुदा के नूर से आदम जुदा नहीं ।"

१८-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम
हे राम
पतित पावन सीताराम

संतोंकी वाणी सुनो, शास्त्र पढ़ो, विद्वान
होओ, लेकिन अगर ईश्वरको हृदयमें
स्थान नहीं दिया तो कुछ नहीं किया.

१९-१२-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

संतों की वाणी सुनो, शास्त्र पढ़ो, विद्वान्
हो लो, लेकिन अगर ईश्वर को हृदय में
स्थान नहीं दिया तो कुछ नहीं किया ।

१९-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम   ॐ राम   पतित पावन सीताराम

मुल्कको हम ~~आझादी~~ स्वराज चाहते हैं लेकिन
उसका अर्थ ठीकर हम शायद नहीं जानते हैं।
एक अर्थ तो यह है कि सबका भय से छुटकारा
पाना.

२०-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापुके आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

मुक्ति तो हम सब चाहते हैं, लेकिन उसका अर्थ ठीक २ हम शायद नहीं जानते हैं। एक अर्थ तो यह है कि जन्म मरण से छुटकारा पाना।

२०-१२-४४

भक्तकवि नरसैंयो कहते हैं, हरिना जन तो मुक्ति न मांगे, मांगे जनमो जनम अवतार रे। इस दृष्टिसे देखें तो मुक्ति कुछ और ही बन जाती है।

२२-११-४४

भक्त-कवि नरसैंयो कहते हैं : "हरि ना जन तो मुक्ति न मांगे, मांगे जनमोजनम अवतार रे।" इस दृष्टि से देखें तो 'मुक्ति' कुछ और रूप लेती है।

२१-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम
हे राम
पतित पावन सीताराम
अनासक्तिकी पराकाष्ठा गीताकी मुक्ति है
और वही अर्थ हम ईशोपनिषद्के पहले मंत्र
में पाते हैं।
२२-१२-४४
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

अनासक्ति की पराकाष्टा गीता की मुक्ति
है और वही अर्थ हम ईशोपनिषत् के
पहले मंत्र में पाते हैं।

२२-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम　　राम　　पतित पावन सीताराम

अनासक्ति कैसे बढ़े? सुख और दुःख, दोस्त और
दुश्मन, हमारा और दूसरोंका — सब समान समझनेसे
अनासक्ति बढ़ती है. इसलिये अनासक्ति का
दूसरा नाम समता है.

२३-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम　　बापुके आशीर्वाद　　सबको सन्मति दे भगवान

अनासक्ति कैसे बढ़े ? सुख और दुःख, दोस्त और दुश्मन, हमारा और दूसरों का—सब समान समझने से अनासक्ति बढ़ती है। इसलिये अनासक्ति का दूसरा नाम समभाव है।

२३-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम — ॐ हे राम — पतित पावन सीताराम

जैसे बिंदु का समुदाय समुद्र है इसी तरह हम
सौ मीलकरके मैत्रीका सागर बन सकते हैं और समाज
में सब दुनियां में मित्रता भाव रहे तो
जगत का स्वरूप बदल जाय.

२४-११-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

जैसे बिंदु का समुदाय समद्र है, इसी तरह हम मैत्री करके मैत्री का सागर बन सकते हैं। और जगत् में सब एक दूसरों से मित्र भाव से रहें तो जगत् का रुप बदल जाय।

२४-१२-४४

ॐ राम
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
आज क्रिसमस का दिन है। हम तो सब धर्मों की
समानता मानते हैं उनके लिये ईसा मसीह का
२५-१२-४४
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

आज क्रिसमस दिन है। हम जो सब धर्मों की समानता मानते हैं, उनके लिये ईसा मसीह का जन्म ऐसा ही माननीय है जैसा राम कृष्णादि का।

२५-१२-४४

ॐ हे राम

रघुपति राघव राजाराम   पतित पावन सीताराम

बीमारी मात्र मनुष्य के लिये शरम की बात होनी चाहीये. बीमारी किसी भी दोषकी सूचक है। जिसका तन और मन सर्वथा स्वस्थ है उसे बीमारी होनी नहीं चाहीये.

२५-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापुके आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

बीमारी मात्र मनुष्य के लिये शर्म की बात होनी चाहिये। बीमारी किसी भी दोष की सूचक है। जिसका तन और मन सर्वथा स्वस्थ है, उसे बीमारी होनी नहीं चाहिये।

२६-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम — हे राम — पतित पावन सीताराम

विकारी विचार भी बीमारी की
निशानी है. इसलिये हम सब विकारी
विचार से बचते रहें।

२७-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ राम

पतित पावन सीताराम

विकारी विचार भी बीमारी की निशानी है। इसलिये हम सब विकारी विचार से बचते रहें।

२७-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापु के आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

ॐ राम
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
विकारी विचारसे बचनेका एक अमोघ
उपाय - रामनाम है. नाम कंठसे ही नहीं
किंतु हृदयसे निकलना चाहिये.
२८-१२-४४
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

विकारी विचार से बचने का एक अमोघ उपाय——रामनाम——है। नाम कंठ से ही नहीं, किंतु हृदय से निकलना चाहिये।

२८-१२-४४
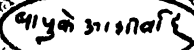
रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

व्याधि अनेक हैं, वैद्य अनेक हैं, उपचार भी
अनेक हैं। अगर व्याधि को एक ही देखें
और उसको मिटानेहारा वैद्य एक रामही
है ऐसा समझें तो बहुत सी झंझटों से
हम बच जायें.

२९-११-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

व्याधि अनेक हैं, वैद्य अनेक हैं, उपचार भी अनेक हैं। अगर व्याधि को एक ही देखें और उसको मिटानेहारा वैद्य एक राम ही है ऐसा समझें, तो बहुत सी झंझटों से हम बच जायँ।

९-१२-४४

आश्चर्य है वैद्य मरते हैं, डाक्टर मरते हैं. उनको पीछे हम भटकते हैं. लेकिन राम जो मरता नहीं है, हमेशा जिंदा रहता है और अचूक वैद्य है उसे हम भूल जाते हैं.

२०-१२-४४

आश्चर्य है वैद्य मरते हैं, डाक्टर मरते हैं, उनके पीछे हम भटकते हैं। लेकिन राम जो मरता नहीं है, हमेशा ज़िंदा रहता है और अचूक वैद्य है उसे हम भूल जाते हैं।

३०-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

इससे भी आश्चर्य यह है कि हम जानते हैं कि हम भी मरनेवाले तो हैं ही, बहुत करें तो वैद्यादि की दवाएं शायद हम थोड़े दिन और काट सकते हैं और इस लोभ में ख़्वार होते हैं.

२१-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

इस से भी आश्चर्य यह है कि हम जानते हैं कि हम भी मरने वाले तो हैं ही, बहुत करें तो वैद्यादि की दवा से शायद हम थोड़े दिन और काट सकते हैं और इस लिये ख्वार होते हैं।

३१-१२-४४

ॐ हे राम

रघुपति राघव राजाराम — पतित पावन सीताराम

इसी तरह बूढ़े, बच्चे, जवान, धनिक, गरीब, सबको मरते हुए पाते हैं तो भी संतोषसे बैठना नहीं चाहते हैं, लेकिन थोड़े दिन जीनेके लिये रामको छोड़कर प्रयत्न करते हैं.

२-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

इसी तरह बूढ़े, बच्चे, जवान, धनिक, ग़रीब, सब को मरते हुए पाते हैं तो भी संतोष से बैठना नहीं चाहते हैं, लेकिन थोड़े दिन जीने के लिये राम को छोड़ सब प्रयत्न करते हैं।

१-१-४५

रघुपति राघव राजाराम

ॐ राम

पतित पावन सीताराम

कैसा अच्छा हो कि इतना समजकर
इन सात नरकोंसे दूर रहकर जो व्याधि आवे
उनको भी बरदाश्त करें और ~~अरे~~ अपना
जीवन आनंदमय बनाकर व्यतीत करें.

२-१-४८

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

कैसा अच्छा हो कि इतना समझ कर हम राम भरोसे रह कर जो व्याधि आवे उसकी भी बरदाश्त करें और अपना जीवन आनंदमय बनाकर व्यतीत करें !

२-१-४५

शरीरधारी महादेव को शरीर से और उसके लेखों से ही हम देखते थे। यह एक ही बात हुई। देहातीत महादेव सर्व-व्यापी है और उसके गुणों से हम उसको पहचान सकते हैं और इस में सब एकसा शरीक हो सकते हैं। किसी को ज़्यादा कम विभाग नहीं मिल सकता है।

३-१-४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

जन्म और मरण शायद एक ही
सिक्के की दो बाजू नहीं है? एक
तरफ देखो तो मरण और दूसरी
तरफ जन्म. इसमें दुःख क्यों? हर्ष किसका?

४-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

जन्म और मरण शायद एक ही सिक्के
की दो बाजू नहीं हैं ? एक तरफ़ देखो
तो मरण और दूसरी तरफ़ जन्म ।
इस से दुःख क्यों ? हर्ष क्यों ?

४-१-४५

जो जनम मरणकी बात सही होय तो, और है, तो हम क्यों मृत्युसे घबराते हैं, दुःखी होते, और मनमें स्पृहा रखते हो? प्रत्येक मनुष्य यह समझकर अपने कार्य करे.

५-२-४५

जो जन्म मरण की बात सही होय, तो और है, तो हम क्यों मृत्यु से ज़रा भी डरें, दुखी हों, और जन्म से ख़ुश हों ? प्रत्येक मनुष्य यह सवाल अपने साथ करे ।

५-१-४५

रघुपति राघव राजाराम

हे राम

पतित पावन सीताराम

जगत द्वंद्वसे भरपूर है. सुखके पीछे दुःख रहा है, दुःखके पीछे सुख, धूप है तो छाया भी है, प्रकाश है तो अंधेरा भी, जन्म है तो मृत्यु भी. इस द्वंद्वसे छूटना अनासक्ति है. द्वंद्वको जीतने का उपाय द्वंद्वको मिटाना नहीं है, लेकिन द्वंद्वातीत, अनासक्त होना है.

६-७-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

जगत् द्वंद्व से भरपूर है। सुख के पीछे दुःख रहा है, दुःख के पीछे सुख। धूप है तो छाया भी है, प्रकाश है तो अंधेरा भी, जन्म है तो मृत्यु भी। इस द्वंद्व से हटना अनासक्ति है। द्वंद्व को जीतने का उपाय द्वंद्व को मिटाना नहीं है, लेकिन द्वंद्वातीत, अनासक्त होना है।

६-१-४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

यह पीछेका बताता हूँ कि सबकी कुंजी सत्यकी आराधनामें है। सत्यकी उपासनामेंसे सब चीज़ मिलती है।

७-९-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

यह पीछे का बताता है कि सब की कूंजी
सत्य की आराधना में है। सत्य की
उपासना से सब चीज़ मिलती है।

७-१-४५

तब सत्यकी आराधना कैसे हो? सत्य कौन जानता है? यहां सापेक्ष सत्यकी बात है. जिसको हम सत्यरूपसे समझें वह सत्य. इतना सत्य भी बहुत कठिन है ऐसा अनुभवसे प्रतीत होगा।

८-१-४५

तब सत्य की आराधना कैसे हो ? सत्य कौन जानता है ? यहां सापेक्ष सत्य की बात है। जिसे हम सत्य रूप से देखें वह सत्य। इतना सत्य भी बहुत कठिन है ऐसा अनुभव से प्रतीत होगा।

८-१-४५

रघुपति राघव राजाराम   हे राम   पतित पावन सीताराम

माना हुआ आदमी सच कहने से क्यों
हिचकता है? शर्म को मारे? किसकी शर्म?
ऊपर है तो क्या? नौकर हु तो क्या? बात
यह है कि आदत आदमी को दबा जाती है।
इन दोनों में और कई आदत भी छूट जांय.

८-९-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापुके आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

जानता हुआ आदमी सत्य कहने से क्यों झीझकता है ? शर्म के मारे ? किसकी शर्म ? ऊपरी है तो क्या ? नौकर है तो क्या ? बात यह है कि आदत आदमी को खा जाती है । हम सोचें और बुरी आदत से छूट जाँय ।

९-१-४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ हे राम पतित पावन सीताराम

छूटें नहीं तो सत्यके रास्ते पर नहीं जा
सकते हैं. बात यह है कि सत्यके लिये
सब कुछ कुरबान करें इसमें हमें ऐसा दीखना
नहीं चाहिये, के किसी हें उनसे बहेतर दीखना
चाहते हैं. कैसा अच्छा हो अगर हम नीचा
हैं तो नीचे दीखें. अगर ऊंचे होना चाहें तो
ऊंचे काम करें, ऊंचा विचारें. लेकिन ऊंचा बनके
तो मनमें भी बड़ा दीखें. कायदा तो [illegible]
तब ऊंचे [illegible].

१०-८-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

छूटें नहीं तो सत्य के रास्ते पर नहीं जा सकते हैं। बात यह है कि सत्य के लिये सब कुछ कुरबान करें। हम हैं ऐसा दीखना नहीं चाहते, लेकिन हैं उससे बेहतर दीखना चाहते हैं। कैसा अच्छा हो अगर हम नीच हैं तो नीच दीखें, अगर ऊंच होना चाहें तो ऊंच काम करें, ऊंच विचारें! ऐसा न हो सके तो भले नीच ही दीखें। कोई रोज़ तब ऊंचे जायगे।

१०-१-४५

मैं जो अनुभव करता हूं, चाहता हूं कि आप भी अपने
आप अपने सुख दुःख का कारण हो।

२२-९-४७

जैसे अनुभव लेता हूं, पाता हूं कि
आदमी अपने आप अपने सुख दुःख का
कारण है।

११-१-४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ राम
पतित पावन सीताराम
ऐसा होते हुए आदमी दुखी दु:खी
क्यों होता है?
22-9-45
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

ऐसा होते हुए आदमी सुखी दुःखी क्यों होता है ?

१२-१-४५

रघुपति राघव राजाराम | हे राम | पतित पावन सीताराम

बात यह है कि आपभी उसे विवाह करना
नहीं चाहता। इसलिये मानता हूं उसे
विचार करनेकी जरुरत ही नहीं है।
२३-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम | बापुके आशीर्वाद | सबको सन्मति दे भगवान

बात यह है कि आदमी ऐसे विचार
करना नहीं चाहता। इसलिये मानता है
ऐसे विचार करने की फ़ुरसत ही नहीं है।

१३-१-४५

रघुपति राघव राजाराम
राम
पतित पावन सीताराम

अगर हम सच्चा जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो मानसिक आलस्य दूर कर हमें मौलिक का विचार करना होगा. परिणाम यह होगा कि हमारा जीवन बहुत सरल हो जायगा.

१४-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

अगर हम सच्चा जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो मानसिक आलस्य छोड़ कर हमें मौलिक विचार करना होगा। परिणाम यह होगा कि हमारा जीवन बहुत सरल हो जायगा।

१४-१-४५

ॐ हे राम

रघुपति राघव राजाराम   पतित पावन सीताराम

ज्ञानीने हमें मुसाफिर कहा है. बात सच्ची है.
हम यहां तो चंद रोजके लिये हैं. बादमें
'मरते' नहीं, आगे चल जाते हैं. कैसा अच्छा,
और सच्चा ख्याल है?

१६-२-४६

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापुके आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

ज्ञानी ने हमें मुसाफ़िर कहा है। बात सच्ची है। हम यहां तो चंद रोज़ के लिये हैं। बाद में 'मरते' नहीं, अपने घर जाते हैं। कैसा अच्छा और सच्चा ख़्याल !

१५-१-४५

रघुपति राघव राजाराम

ॐ राम

पतित पावन सीताराम

हजारों मन कचरा बड़े परिश्रमसे
निकालते हैं तब कोई हीरा हाथों
आता है, क्या इन्सान परिश्रमका
थोड़ा हिस्सा भी कचरारूप दुर्गुण निकालने
में और हीरारूप सत्य ढूंढनेमें देते हैं!

१६-१-४८

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

हज़ारों मण कचरा बड़े परिश्रम से निका-
लते हैं तब कोई हीरा हाथों में आता है।
क्या हम इस परिश्रम का थोड़ा हिस्सा भी
कचरा रूप झूठ निकालने में और हीरा
रूप सत्य ढूंढ़ने में देते हैं ?

१६-१-४५

बगैर परिश्रमसे याने बगैर त्यागके कुछ भी हो ही नहीं सकता है तो आत्म-शुद्धि कैसे हो सकती !

६-१-४५

बग़ैर परिश्रम से, यानि बग़ैर तप के, कुछ भी हो नहीं सकता है, तो आत्म-शोध कैसे हो सके ?

१७-१-४५

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम

अगर सब समय भगवानका है तो हम एक क्षण भी निकम्मा क्यों जाने दें? अगर हम भगवानके हैं तो हमारे शरीरका एक हिस्सा भी मौज शौकमें क्यों दें?

१८-९-४५

बापुके आशीर्वाद

ईश्वर अल्ला तेरे नाम
सबको सन्मति दे भगवान

अगर सब समय भगवान् का है तो हम
एक क्षण भी निक्कमी क्यों जाने दें ?
अगर हम भगवान् के हैं तो हमारे शरीर
का एक हिस्सा भी मौज शौक में क्यों दें ?

१८-१-४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ राम
पतित पावन सीताराम

आवश्यक कार्य शक्तिप्रद है क्योंकि
आवश्यक कार्य भगवान् करते हैं.
१९-७-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

अनासक्त कार्य शक्तिप्रद है, क्योंकि
अनासक्त कार्य भगवान् भक्ति है ।

१९-१-४५

जमशेद मेहता ने आसीसी के फ्रान्सिस की एक प्रार्थना भेजी है। उस में यह हिस्सा है : "हे भगवान, किसी को देने से ही हमें मिलता है, मरने से ही हम अमर पद पा सकते हैं।"

२०-१-४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ
हे राम
पतित पावन सीताराम
ईश्वरका नास्तिक तो नहीं है जो उस पर महोब्बत
करता है.
२२-१-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

ज़मीन का मालिक तो वही है जो उस पर
मेहनत करता है ।

२१-१-४५

ॐ राम
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
जो कायकुछ भीतर में स्वच्छ है वह
बाहर में अस्वच्छ हो ही नहीं सकता।
२२-७-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

जो सचमुच भीतर में स्वच्छ है वह बाहर
में अस्वच्छ हो ही नहीं सकता ।

२२-१-४५

रघुपति राघव राजाराम　　　ॐ　　　पतित पावन सीताराम

सच्चा कार्य कभी निष्फल नहीं होता,
सच्चा वचन अंत में कभी अप्रिय नहीं होता।
२६-१-४६

ईश्वर अल्ला तेरे नाम　　　बापु के आशीर्वाद　　　सबको सन्मति दे भगवान

सच्चा कार्य कभी निक्कमा नहीं होता,
सच्चा वचन अंत में कभी अप्रिय नहीं
होता ।

२३-१-४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

शुद्ध हृदयसे निकला हुआ वचन कभी
निष्फल नहीं होगा.

२०-७-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
ॐ
हे राम
पतित पावन सीताराम
शुद्ध हृदय से निकला हुआ वचन कभी
निष्फल नहीं होता ।
२४-१-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

आलस्य से हमें दुःख होगा तो हम आलसी नहीं रहेंगे. ऐसे ही यदि हमें व्यभिचार से दुःख होगा तो व्यभिचारी नहीं बनेंगे, नहीं रहेंगे.

२५-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

आलस्य से हमें दुःख होगा तो हम आलसी नहीं रहेंगे। ऐसे ही यदी हमें व्यभिचार से दुःख होगा तो व्यभिचारी नहीं बनेंगे, नहीं रहेंगे।

२५-१-४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ
राम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापु के आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

प्रथम काम बाद में मिले तो, दाम जितना काम। यह तो हुई परमात्मा की सेवा। अगर दाम पहले मांगोगे तो वह हुई शेतान की सेवा।

स्वतंत्रता दिन
२६-१-४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ
हे राम
पतित पावन सीताराम
कामनाको संपूर्ण नहीं करना अच्छा है.
लेकिन शुरू करने के बाद उसे रोकना
असंभव नहीं तो कठिन तो है ही.
२०-१-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

कामना को संतुष्ट नहीं करना अच्छा है।
लेकिन शुरू करने के बाद उसे रोकना
असंभव नहीं तो कठिन तो है ही।

२७-१-४५

ॐ
हे राम
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
যো মনুষ্য অপনে পর কাবু নহীং রখ
সকতা হৈ বহ দুসরোঁ পর কভী রখা।
কাবু নহীং রখ সকতা. ২৮-১-৪৬
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

जो मनुष्य अपने पर काबू नहीं रख
सकता है वह दूसरों पर कभी सच्चा
काबू नहीं रख सकता ।

२८-१-४५

रघुपति राघव राजाराम   हे राम   पतित पावन सीताराम

अपनेको पहचानने के लिये मनुष्यको अपनेसे बाहर निकल
कर तटस्थ बन कर अपने को देखना है.

२९-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापुके आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

अपने को पहचानने के लिये मनुष्य को
अपने से बाहर निकल कर तटस्थ बन
कर अपने को देखना है ।

२९-१-४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

जो मनुष्य किसीका भी बोज हलका करता है वह निकम्मा नहीं है.

१०-९-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

जो मनुष्य किसी का भी बोझ हलका
करता है वह निकम्मा नहीं है।

३०-१-४५

ॐ
हे राम
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
जिसे हम सही और शुभ मानें वही करने में हमारा सुख है,
हमारी शांति है, नहीं कि जो दूसरे करें या करावें उसे करने में.
२९.१.४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

जिसे हम सही और शुभ मानें वही करने में हमारा सुख है, हमारी शांति है, नहीं कि जो दूसरे कहें या करें उसे करने में।

३१-१-४५

ॐ
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
पुस्तक वांचन से शान्ति तो आती है लेकिन
बिना ज्ञानके सही शांति भला नहीं मिलती.
२-२-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

पुख्त वांचन से शक्ति तो आती है
लेकिन बिना ज्ञान के सही स्वतंत्रता
नहीं मिलती ।

१-२-४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ राम
पतित पावन सीताराम
किसीकी मदद मांगना अपनी आझादी बेचना है.
२-२-४७
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

किसी की मेहरबानी मांगना अपनी
आज़ादी बेचना है ।

२-२-४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ राम
पतित पावन सीताराम
मनुष्यकी प्रतिष्ठा उसके हृदयमें है, नहिं कि उसके मस्तिष्कमें यानि बुद्धि में.
२-२-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

मनुष्य की प्रतिष्ठा उस के दिल में—
हृदय में है, नहीं कि उसके मस्तिष्क में,
यानि बुद्धि में ।

३–२–४५

धर्म वह है जो सबको एक करता है यानि सब धर्मों को एक साथ जीवन में ओत प्रोत है.

४-२-४८

धर्म वह है जो सब धारण करता है,
यानि सब हिस्से में सब समय जीवन में
ओतप्रोत है ।

४-२-४५

रघुपति राघव राजाराम — हे राम — पतित पावन सीताराम

धर्म कुछ जीवन से भिन्न नहीं है, जीवन ही धर्म माना जाय. बगैर धर्म का जीवन मनुष्य जीवन नहीं है, वह पशु जीवन है.

५-२-४६

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

धर्म कुछ जीवन से भिन्न नहीं है, जीवन ही धर्म माना जाय। बग़ैर धर्म का जीवन मनुष्य जीवन नहीं है, वह पशु जीवन है।

५-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
हे राम
पतित पावन सीताराम
जो ज्यादा कमा पाते हैं या ज्यादा काम करते हैं
वे कम खर्च करना जानते हैं। दोनों साथ मिलते ही
नहीं। ईश्वरी कुदरत सबसे ज्यादा काम करती है,
सोती नहीं, लेकिन मुफत है।
६-२-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

जो ज़्यादा काबू पाते हैं या ज़्यादा काम करते हैं, वे कम से कम बोलते हैं। दोनों साथ मिलते ही नहीं। देखो, कुदरत सब से ज़्यादा काम करती है, सोती नहीं, लेकिन मूक है।

६-२-४५

बापुके आशीर्वाद

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

राम

जो दुःखीओंका भी ध्यान करता है वह अपना ध्यान नहीं करेगा, उसको इतना समय कहां(से)

७-२-४८

ईश्वर अल्ला तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान

बापुके आशीर्वाद

जो दु:खीओं का ही ख्याल करता है वह अपना ख्याल नहीं करेगा, उसको इतना समय कहां से ?

७-२-४५

रघुपति राघव राजाराम

पतित पावन सीताराम

जो मनुष्य जो देखना चाहता है वही देखेगा,
सुनना चाहता है वही सुनेगा। और गंदे
पानीमें कुछ नहीं देखेगा। फिर कुछ का पता
भी नहीं लगेगा। पानीयों क्या है? पानी में से
को कादव है, पर भीतर उसका भी पता उसे
शायद ही होगा।

८-२-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

जो मनुष्य जो देखना चाहता है वही देखेगा, सुनना चाहता है वही सुनेगा। जैसे माली बग़ीचे में फूल को ही देखेगा, फ़िलसुफ़ को पता भी नहीं लगेगा बग़ीचे में क्या है। बग़ीचे के बाहर है या भीतर उसका भी पता उसे शायद नहीं होगा।

८-२-४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

जिन के साथ हमारा सहवास है उनसे
अपनी त्रुटियां देख सकते हैं और सुधार
भी सकते हैं । बेहतर है कि हम रोज़
के व्यवहार को शुद्धतम रखें तो सच्चे
सेवक बनने की आशा रख सकते हैं ।

९-२-४५

सत्यके व्रतकी शुद्ध निशानी है कि सत्यार्थी मौनका सेवन करे. ऐसे होते हुए भी हम पाते हैं कि बहुत सत्यार्थी बहुत बातें करते हैं. कारण स्पष्ट है — आदत. हम इस आदतको छोडें.

२०-२-४५

सत्य के व्रत की शुद्ध निशानी है कि सत्यार्थी मौन का सेवन करे। ऐसे होते हुए भी हम पाते हैं कि बहुत सत्यार्थी बहुत बातें करते हैं। कारण स्पष्ट है—आदत। हम इस आदत को छोड़ें।

१०-२-४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ
हे राम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

मृत प्रियजन का स्मरण कैसे करें ? मेरा दृढ़ विश्वास है कि वे मरते नहीं, शरीर मरता है । लेकिन स्मरण तो क़ायम रखना ही है, उनके सब गुण हमारे में यथाशक्ति उतार कर, उनकी शुभ प्रवृत्ति अपनाकर और उसमें वृद्धि कर कर। समाधि पर फूलादि रखना उसी स्मरण को बड़ाने के लिये है । अगर फूलों से ही संतुष्ट रहें तो उसे मैं मूर्ती-पूजा कहुंगा ।

११-२-४५

यह कितनी गलत बात है कि हम मैले रहें
और दूसरों को साफ रहने की सलाह दें?

१२-२-४५

यह कितनी ग़लत बात है कि हम मैले रहें और दूसरों को साफ़ रहने की सलाह दें !

१२-२-४५

दूसरे और हमारे में, सारे जगत् में जो भेद है वह अंश का या दरजों का ही है, जाति का कभी नहीं, जैसे एक ही जाति के वृक्षों में होता है। इस में क्रोध क्या, द्वेश क्या, भेद क्या ?

१३–२–४५

કોઈ શુભ નિશ્ચય ભી મનુષ્યને જલ્દી ન કરના કિંતુ
વિચારપૂર્વક કરે તો ઉસકો કભી ન છોડે.

૧૪-૨-૪૫

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
कोई शुभ निश्चय भी मनुष्य भले न करे
लेकिन विचार पूर्वक करे तो उसे कभी
न छोड़े ।
१४-२-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

ॐ राम
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
आदमीको अपनेको धोका देनेकी
शक्ति इतनी है कि वह दूसरोंको धोका
देनेकी शक्तिसे बहुत ओछी दिखती है. इसका ख्याल
सतत रखना। इसके मननमें आदमीका हित है!
१५-२-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

आदमी को अपने को धोका देने की शक्ति इतनी है कि वह दूसरों को धोका देने की शक्ति से बहुत अधिक है। इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हरेक समझदार आदमी है।

१५-२-४५

जो ग़ुस्सा स्वजन पर होता है उसे रोकने में जप है। परजन पर ग़ुस्सा रोकने के लिये हम मजबूर हो जाते हैं। उस में जप कैसे ?

१६-२-४५

रघुपति राघव राजाराम

ॐ

श्रीराम

पतित पावन सीताराम

जीना यानी भोग करना - खाना पीना रहना - नहीं, लेकिन ईश्वर की स्तुति करना और मानवजाति की सच्ची सेवा करना.

१७-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

जीना मानी मौज करना—खाना, पीना, कूदना—नहीं, लेकिन ईश्वर की स्तुति करना अर्थात् मानव जाति की सच्ची सेवा करना ।

१७–२–४५

मनुष्यजीवन और पशुजीवनमें फरक क्या है?
इसका संपूर्ण विचार करनेसे हमारी काफी
मुश्किलें हल होती हैं.

१८-२-४५

मनुष्य जीवन और पशु जीवन में फ़रक
क्या है ? इसका संपूर्ण विचार करने से
हमारी काफ़ी मुसीबतें हल होती हैं ।

१८-२-४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

मनुष्य जब अपनी हदसे बाहर जाता है
इससे बाहर काम करता है, विचार भी
करता है तब उसे ग्लानि हो सकता है
क्रोध आ सकता है. ऐसी जल्दबाजी
निकम्मी है, नुकसान भी कर सकती है.

१८-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

मनुष्य जब अपनी हद से बाहर जाता है, हद से बाहर काम करता है, विचार भी करता है, तब उसे व्याधि हो सकती है, क्रोध आ सकता है। ऐसी जल्दबाज़ी निकम्मी है, नुक़सान भी कर सकती है।

१९-२-४५

आज प्रातःकालके भजनमें था इसलिए इसको कभी नहीं भी भूलना, इसे भूलते हैं वही हार खाता है: बापु.

२०-२-४७

रघुपति राघव राजाराम
ॐ राम
पतित पावन सीताराम
आज प्रातःकाल के भजन में था ईश्वर
हम को कभी नहीं भूलता, हम भूलते हैं
वही सच्चा दुःख ।
२०-२-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम ॐ हे राम पतित पावन सीताराम

जब ईश्वर नहीं बचाना चाहता, तब न धन बचा सकता, न मातपिता, न बड़ा डाक्टर!!! तब हमें क्या करना चाहीये?

२१-२-४६

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

जब ईश्वर नहीं बचाना चाहता, तब न धन बचायेगा, न मातपिता, न बड़ा डाक्टर !!! तब हमें क्या करना चाहिये ?

२१-२-४५

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

हमारी गंदगी हमने जब नहीं निकाली है,
तब तक प्रार्थना करने का हमें कुछ हक़
है क्या ?

२२-२-४५

ॐ राम

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

माला में जो संतने सिखाई है, वह तुलसी का अनुभव की है, स्वाभाविक है, लेकिन फेरनेवाला यदि माला में ही सर्वस्व है ऐसा मानता है तो उसे फेंक दे; यदि माला उसको परमात्मा को नजदीक ले जाती है, उसके कर्तव्य में सहायता करती है तो उसको उसे विधिवत से आगे छिपावे.

बापु 　　　　 २३-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम 　 बापुके आशीर्वाद 　 सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

माला लें, उसे संत ने फिराई है, वह तुलसी या सुखड की है, रुद्राक्ष हो, लेकिन फेरनेवाला यदि माला में ही सर्वस्व है ऐसा मानता है तो उसे फेंक दे। यदि माला उसको परमात्मा के नज़दीक ले जाती है, अपने कर्तव्य में सावधान करती है, तो भले उसे विधिवत ले और फिरावे।

वर्धा : २३-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

हम हैं बन्दों की ईश्वर है. इसीसे हम कहलाते हैं कि मनुष्य मात्र, जीव मात्र, ईश्वरका अंश है.

२८-२-४७

हम हैं क्योंकि ईश्वर है। इसी से हम
देखते हैं कि मनुष्य मात्र, जीव मात्र,
ईश्वर का अंश है।

२४–२–४५

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
ॐ राम
नमस्कारमें एक महावाक्य है: मेरे किसीने
न चिन्ता रहे न तू किसीका गम रखे!
यह वचन उनके लिये है जो परमात्माको
मानता है!
२५-२-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

नये करार[1] में एक यह वाक्य है: "तेरे दिल में न चिंता रहे, न तू किसी का भय रखे।" यह वचन उसके लिये है जो परमात्मा को मानता है।

२५-२-४५

[1] *The New Testament*

वही नया करार कहता है कि अगर ईश्वर हमें लालच में डालता है, तो उसमें से बच जाने का रास्ता भी वही बताता है। यह बात सही उन्हीं के लिये है जो अपने आप लालच में फंसते नहीं।

२६-२-४५

रघुपति राघव राजाराम   ॐ राम   पतित पावन सीताराम

नामकी महीमा सिर्फ तुलसीदासने ही गाई है ऐसा नहीं है. बाईबलमें मैं वही पाता हुं. दसवें रोमनके १३ आयतमें कहते हैं जो कोई ईश्वरका नाम लेगा वह मुक्त होगा याने.

२७-२-४६

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापुके आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

नाम की महीमा सिर्फ़ तुलसीदास ने ही गाई है ऐसा नहीं है। बाईबल में मैं वही पाता हूँ। दसवें रोमन के १३ कलम में कहते हैं जो कोई ईश्वर का नाम लेंगे वे मुक्त हो जायंगे।[1]

२७-२-४५

[1] "For whosoever shall call upon the name of the Lord shall be saved."—*The New Testament* (Romans 10 : 13.)

रघुपति राघव राजाराम — पतित पावन सीताराम

ॐ हे राम

गुस्सा छीपा नहीं रहता. वह मनुष्यके मुखपर लिखा रहता है. इस शास्त्रको हम पूरे तौरसे नहीं जानते लेकिन बात साफ़ है.

१८-२-४६

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

गुनाह छिपा नहीं रहता । वह मनुष्य क
मुख पर लिखा रहता है । उस शास्त्र
को हम पूरे तोर से नहीं जानते, लेकिन
बात साफ़ है ।

२८-२-४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ
राम
पतित पावन सीताराम
आजकल बाइबल फिर से पढ रहा
हूं। आज यह देखता हूं: "श्रद्धा से जो कुछ
तुम मांगोगे वह मैं दूंगा।" (मेथ्यू २१.२२)
२-३-४६
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

आजकल बाईबल के फ़िक्रे पढ़ रहा हूं। आज यह देखता हूं : "श्रद्धा से जो कुछ तुम मांगोगे, तुम्हें मिलेगा।"[1]
(मेथी २१–२२)

१–३–४५

[1] "And all things, whatsoever ye shall ask in prayer, believing, ye shall receive."—*The New Testament* (St. Matthew 21 : 22.)

'*निर्बल के बल राम*' के जैसा ही साम ३४–१८ में है। जो टूट गया है उसके नज़दीक परमात्मा है ही, और जिस को सच्चा पश्चात्ताप हुआ है उसे बचा लेता है[1]।

२–३–४५

[1] "The Lord *is* nigh unto them that are of a broken heart; and saveth such as be of a contrite spirit."—*The Old Testament* (Psalm 34 : 18)

ईश्वर हर-जगामें रहता है डरो नहीं। क्योंकि परमात्मा तुम्हारे पास ही है।

६-३-४५

आइलामा ४१–१० में कहता है : डरो नहीं, क्योंकि परमात्मा तुम्हारे पास ही है।[1]

३–३–४५

[1] "Fear thou not; for I *am* with thee."—*The Old Testament* (Isaiah 41 : 10)

ॐ राम

रघुपति राघव राजाराम — पतित पावन सीताराम

एक ईश्वर में ही संपूर्ण शक्ति है. इसलिये ईश्वर में ही इनसानको लिये विश्वास रखना है, इनसान पर कभी नहीं। (इशाया २६–४ मंत्र)

४-३-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

एक ईश्वर में ही संपूर्ण शक्ति है। इसलिये ईश्वर में ही हमेशा के लिये विश्वास रखा जाय, इनसान पर कभी नहीं।[1]

(इसाया २६–४ से)

४–३–४५

[1] "Trust ye in the Lord for ever: for in the Lord Jehovah *is* everlasting strength."—*The Old Testament* (Isaiah 26 : 4)

रघुपति राघव राजाराम   ॐ राम   पतित पावन सीताराम

पानीका स्वभाव नीचे जानेका है.
इसी तरह दुर्गुण नीचे ले जाता है
इसलिये मनुष्य बचना ही चाहिये.
सद्गुण ऊंचे ले जाता है इसलिये
उसको अपनाना चाहिये.

२-२-४६

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापुके आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

पानी का स्वभाव नीचे जाने का है। इसी तरह दुर्गुण नीचे ले जाता है, इसलिये सहल होना ही चाहिये। सद्गुण ऊंचे ले जाता है, इसलिये मुश्किल सा लगता है।

५-३-४५

मेरी कृपा तेरे लिये काफी होनी चाहीये
क्योंकि मेरा बल दुर्बलता में ही पूर्ण होता है।
(२करि १२-९)
६-३-४५

"मेरी कृपा तेरे लिये काफ़ी होनी चाहिये, क्योंकि मेरा बल दुर्बलता में ही पूर्ण होता है।"[१] (२ कोर : १२–९)

६–३–४५

[1] "My grace is sufficient for thee : for my strength is made perfect in weakness."—*The New Testament* (2 Corinthians 12 : 9)

ईश्वर हमारा आश्रय है, वही हमारा बल है और वही आपत्ति के समय में हमारी रक्षा करता है। (साम ४६-१)

७-३-४५

"ईश्वर हमारा आश्रय है, वही हमारा बल है और वही आपत्ति के समय में हमारी रक्षा करता है।"[1] (साम ४६-१)

७-३-४५

[1] "God is our refuge and strength, a very present help in trouble."—*The Old Testament* (Psalm 46 : 1)

ईश्वरका कौल है: मैं आता हूं, कहां था, न किसीके हूंगा। मैं सब जगह में हूं, सबमें हूं। इतना जानते हुए भी हम ईश्वरसे दूर भागते हैं और विनाशी अपूर्ण है उसका सहारा ढूंढते हैं और दुखी होते हैं! इससे अधिक आश्चर्य किसमें है?

८-३-'४७

ईश्वर का क़ौल है : मैं आज हूं, कल था, भविष्य में हूंगा; मैं सब जगह में हूं, सब में हूं। इतना जानते हुए भी हम ईश्वर से दूर भागते हैं और (जो) विनाशी अपूर्ण है उसका सहारा ढूंढते हैं और दुःखी होते हैं। इस से अधिक आश्चर्य किसी में है ?

८-३-४५

ॐ राम
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
पूर्व पश्चिम में भेद न करें. हरेक वस्तु
कहीं की हो उसकी तुलना। गुणदोष पर
करें. तब ही बुद्धि न्याय कर सकते हैं.
९-३-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

पूर्व पश्चिम में भेद न करें। हरेक वस्तु
कहीं की हो उसकी तुलना गुण दोष पर
करें। तब ही शुद्ध न्याय कर सकते हैं।

१-३-४५

भा ५-५०४, सुख दुःख कभी [illegible] होते
ईश्वर प्रेरित नहीं है. वह नियम है. किंतु
भी. इसका अर्थ हुआ कि मनुष्य का भाग्य
~~का~~ आपना बनता है. सत्कर्म से चढता है
दुष्कर्म से पडता है.

२० - ६ - ४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

पाप-पुण्य, सुख-दुःख क्यों ? ईश्वर होते
हुए ईश्वर व्यक्ति नहीं है । वह नियम
है, नियंता भी । इसका अर्थ हुआ कि
मनुष्य कर्म का भोग बनता है । सत्कर्म
से चढ़ता है, दुष्कर्म से पड़ता है ।

१०-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम हे राम पतित पावन सीताराम

समाजकी सच्ची सेवा यह है जिससे समाज
मानी सब अंगोंसे ऊंचा चढ़े. समाज हरेक
कार्य ही मनुष्य कर सकता है और वह
समाज कैसे ऊंचा चढ़े.

११-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

समाज की सच्ची सेवा यह है जिस से समाज, यानी सब लोग, ऊंचे चढ़ें। समाज देख कर ही मनुष्य कह सकता है अमुक समाज कैसे ऊंचे चढ़े।

११-३-४५

मनुष्य जानता है कि जब मरनेके नजदीक पहोंचता है सिवाय ईश्वर को कोई सहारा नहीं है, तो भी रामनाम लेते हिचकिचाहट होती है. ऐसे क्यों?

२२-३-४६

मनुष्य जानता है कि जब मरने के नजदीक पहुंचता है सिवाय ईश्वर के कोई सहारा नहीं है, तो भी रामनाम लेते हिचकिचाहट होती है। ऐसे क्यों?

१२-३-४५

अहिंसा के मार्फत स्वतंत्रता पाने का एक ही मार्ग है: मर कर जीते हैं, मार कर कभी नहीं.

२३-३-४७

अहिंसा के मार्फ़त स्वतंत्रता पाने का एक ही मार्ग है : मर कर जीते हैं, मार कर कभी नहीं ।

१३-३-४५

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

हे राम

मरें कैसे? आत्महत्या करके? कभी नहीं।
आवश्यकता पर मरने की तैयारी रखकर
मरें तब तो ज़िंदा रहने को जीते मरें।
१४-३-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान

बापुके आशीर्वाद

मरें कैसे ? आत्महत्या करके ? कभी नहीं । आवश्यकता पर मरने की तैयारी रख कर मरें तब तो ज़िंदा रहने के लिये मरें ।

१४-३-४५

ॐ
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
धैर्य से, शांति से क्या क्या नहीं हो
सकता है! इसका नमूना जो लेना चाहें
उनको यहां मिल सकता है।
२५-३-४५
ईश्वर अल्लाह तेरे नाम
आपके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

धैर्य से, शांति से क्या नहीं हो सकता है!
उसका तजर्बा जो लेना चाहें उनको रोज़
मिल सकता है।

१५-३-४५

रघुपति राघव राजाराम

ॐ हे राम

पतित पावन सीताराम

किस्मत और पुरुषार्थका झगड़ा रोज चलता है. पुरुषार्थ करते रहें और परिणाम ईश्वर पर छोड़ें.

१६-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

क़िस्मत और पुरुषार्थ का झगड़ा रोज़ चलता है। हम पुरुषार्थ करते रहें और परिणाम ईश्वर पर छोड़ें।

१६-३-४५

किस्मत पर न सब छोड़ें, न पुरुषार्थ का नाश करें। किस्मत पलटती रहेगी। हम देखें कहां दखल दे सकते हैं। देना फ़र्ज़ होता है, परिणाम कुछ भी हो।

१७-३-४७

क़िसमत पर न सब छोड़ें, न पुरुषार्थ का फांका करें। क़िसमत चलती रहेगी। हम देखें कहां दख़ल दे सकते हैं, देना फ़र्ज़ होता है, परिणाम कुछ भी हो।

१७–३–४५

रघुपति राघव राजाराम

ॐ हे राम

पतित पावन सीताराम

दुःखद बात तो यह है कि हम जानते हैं क्या करना, लेकिन उसे हम कर नहीं पाते. इसका उत्तर हरेक मनुष्य अपने लिये दे.

१८-३-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

दु:खद बात तो यह है कि हम जानते हैं क्या करना, लेकिन उसे हम कर नहीं पाते। इसका उत्तर हरेक मनुष्य अपने लिये दें।

१८-३-४५

प्रतिक्षण अनुभव लेता हूं कि मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही चाहिये तो कम से कम बोलो। एक शब्द से चले तो दो नहीं।

१९-३-४५

प्रतिक्षण अनुभव लेता हूं कि मौन
सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही
चाहिये तो कम से कम बोलो। एक
शब्द से चले तो दो नहीं।

१९-३-४५

छोटी २ बातें जब इकट्ठी करें तब समझना
कि कहां मैं आसक्ति है. उसे ढूंढो और
निकालो. बड़ी बातों में इनसी परख होती
है, ऐसा मानना भ्रम है. बड़ी बातों में
इन ममत्व छुपे होते हैं. उसका भान सीधा
पता नहीं है.

२०-३-४५

बापुके आशीर्वाद

छोटी २ बातें जब हलाक करें तब समझना कि कहां भी आसक्ति है। उसे ढूंढो और निकालो। बड़ी बातों में हम सीधे रहते हैं ऐसा मानना भ्रम है। बड़ी बातों में हम मजबूर होते हैं। उसका नाम सीधापन नहीं है।

२०-३-४५

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापु के आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

ऐसे मौक़े पर याद रखने का श्लोक यह है : मात्रा स्पर्ष आते हैं जाते हैं, उसे सहन करो ।

२१-३-४५

जो कुछ करें, सुव्यवस्थित करें या न करें। इसका प्रत्यक्ष दर्शन नित्य होता है। आज खूब हुआ। बा की तिथि थी। गीता पारायण थी। उस में कुछ भी रस नहीं था।

२२-३-४५

ॐ
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम

गलती ही। गलती कितनी ही जब कबूल की जाय
जाते हैं। गलती जब दबाई है तो वह
फोड़ा की जैसी फूटती है और भयंकर
स्वरूप लेती है।

२२-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

ग़लती ग़लती मिटती है जब दुरस्ती कर लेते हैं। ग़लती जब दबा देते हैं, तब फोड़ा के जैसी फूटती है और भयंकर स्वरूप लेती है।

२३-३-४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ हे राम पतित पावन सीताराम

आत्मा को पहचानने से उसका ध्यान धरने से और उसके गुणों का अनुकरण करने से मनुष्य ऊंचे जाता है। उलटा करने से नीचे गिरता है।

१४-३-४६

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापु के आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

आत्मा को पहचानने से, उसका ध्यान धरने से और उसके गुणों का अनुसरण करने से मनुष्य ऊंचे जाता है। उलटा करने से नीचे जाता है।

२४-३-४५

रघुपति राघव राजाराम   ॐ राम   पतित पावन सीताराम

धैर्य किसे कहें? शंकराचार्य कहते हैं: एक सुली-घासकी-सली, लेकर किनारे बैठा और सुलीपर पानीका बुंद रखा। अपार धैर्य हुआ। और नजदीकमें ऐसी खाई है जिसमें बुंद रखीन रहे निकालना। ऐसे तो कालान्तरमें समुद्र खाली होगा। यह कसौटी धैर्यकी दिखाती है.

२५-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापुके आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

धैर्य किसे कहें ? शंकराचार्य कहते हैं : एक सुली—घास की—लो, समुद्र किनारे बैठो और सुली पर पानी का बुंद लो। अगर धैर्य होगा और नज़दीक मे ऐसी खाई है जिस में बुंद सुरक्षित रह सकता है, तो कालवशात् समुद्र ख़ाली होगा। यह क़रीब २ पूर्ण धैर्य का दृष्टांत है।

२५–३–४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ हे राम
पतित पावन सीताराम
जिसको इतना धैर्य नहीं है वह अहिंसा
पालन नहीं कर सकता है.
२६-२-४२
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
ॐ राम
पतित पावन सीताराम
जिसको इतना धैर्य नहीं है, वह अहिंसा
पालन नहीं कर सकता है।
२६-३-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ राम

पतित पावन सीताराम

सांप और मनुष्य में क्या फरक? देखने में सांप पेटके बल चलता है, मनुष्य पैरोंपर टटार रहकर चलता है. लेकिन यह देखाव है. जो मनुष्य मनमें पेटके बल चलता है उसका क्या?

२७-३-४६

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

सांप और मनुष्य में क्या फ़रक ? देखने में सांप पेट के बल चलता है, मनुष्य पैरों पर टटार रहकर चलता है। लेकिन यह देखाव है। जो मनुष्य मन से पेट के बल चलता है, उसका क्या ?

२७-३-४५

प्रतिदिन मौनका महत्त्व मैं देखता हूं.
सबके लिये अच्छा है लेकिन जो कामोंमें
डूबा रहता है उसके लिये तो मौन जरूरी
है.

२८-३-४८

प्रतिदिन मौन का महत्त्व मैं देखता हूं । सब के लिये अच्छा है, लेकिन जो कामों में डूबा रहता है उसके लिये तो मौन सुवर्ण है ।

२८–३–४५

ॐ राम

रघुपति राघव राजाराम

पतित पावन सीताराम

"उतावळा सो बावरा, धीरा सो गंभीर"
प्रति क्षण इसका दृष्टांत देखा जाता है।

२९-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

"उतावला सो ब्हावरा, धीरा सो गंभीरा ।" प्रतिक्षण इसका सत्य देखा जाता है ।

२९-३-४५

नियम का छूट जाना कैसा खतरनाक है?
मुंबई आया और रोज़ा लिखना छूटा.
लिखा ३-४-४५ २०-३-४५

नियम का छूट जाना कैसा ख़तरनाक है ! मुंबई आया और रोज़ लिखना छूटा ।

(लिखा : ३-४-४५)

३०-३-४५

बगैर नियम के इल्म से काम नहीं चलता.
नियम इल्म हासिल के लिये टूट जाता तो
सूर्यमंडल के तारा आदि कैसे टिक सकता.
लिखा ८-४-४७ २१-३-४७

बग़ैर नियम के एक भी काम नहीं बनता। नियम एक क्षण के लिये टूट जाय, तो सूर्यमंडल सारा अस्त-व्यस्त हो जायगा।

(लिखा : ३-४-४५)

३१-३-४५

यह बात छोटे, मोटे, सब के लिये है ऐसा
सोच कर हम सीखें और चलें, या ज़िंदा
होते हुए भी मरें

(लिखा : ३-४-४५)

१-४-४५

ॐ
हे राम
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
बगैर शराफतके इन्सान कहींका पायमाल
बनता है.
किरकी ४-४५ २-४-४५.
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

बग़ैर जरूरत के हाजत बढ़ाना पापसा
लगता है।

(लिखा : ३-४-४५)
२-४-४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

आजका दिन फांसीवालोंको बचानेके लिये हडतालका है. अगर लोग मानें, शांत रहकर आजका काम करेंगे तो अहिंसाके मार्गमें हमने बडा काम किया होगा।

३-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

आज का दिन फांसी वालों[1] को बचाने के लिये हड़ताल का है। अगर लोग मात्र समझ बूझ कर आज का कार्य करें, तो अहिंसा के मार्ग में हमने बड़ा काम किया होगा।

३-४-४५

[1] चिमूर वाले क़ैदियों के तरफ़ इशारा है।

—सम्पादक

ॐ
राम
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
मनुष्य मानता है क्या करना।
लेकिन मानता है वह करता नहीं।
उसका क्या कारण?
४-४-४७
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

मनुष्य जानता है क्या करना, लेकिन जानता है वह करता नहीं। उसका क्या कारण?

४-४-४५

अगर हम बाहर के मानसिक वायुमंडल को अलग नीकालें तो हमारा नाश ही है. बाहर वालों के दीमाग के बारे में प्रतिदिन वायुमंडल बदलता ही रहता है. हम कर्तव्य पालन करें और अनासक्त रहें.

२-४-४५

अगर हम बाहर के मानसिक वायुमंडल के असर नीचे आवें, तो हमारा नाश ही है। चीमूर वाले क़ैदियों के बारे में प्रतिदिन वायुमंडल बदलता ही रहता है। हम कर्तव्य पालन करें और अनासक्त रहें।

५-४-४५

रघुपति राघव राजाराम

ॐ राम

पतित पावन सीताराम

सीधी बातको भी मनुष्य टेढी समझे और सहन करनेमें कितनी भारी अहिंसा चाहीये!

५-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

सीधी बात को भी मनुष्य टेढ़ी समझे,
उसे सहन करने में कितनी भारी अहिंसा
चाहिये !

६-४-४५

शरीरको बचाने के लिये बहुत उद्यम करता हूं, आत्माको पहचानने के लिये इतना करता हूं क्या?

७-४-४५

शरीर को बचाने के लिये बहुत उद्यम
करता हूँ, आत्मा को पहचानने के लिये
इतना करता हूँ क्या ?

७-४-४५

और सब जुलिसे मैं गुस्सा करता हूं, रोता हूं, हसता हूं,
रहनवाता हूं. यह सब छोड कर, जीवन रखकर,
और समभाव जितना ही एक सच्चा धर्म नहीं है क्या?

८-४-४७

ग़ैर-समझ से मैं ग़ुस्सा करता हूं, रोता हूं, हंसता हूं, रहम खाता हूं। यह सब छोड़ कर, धीरज रख कर, ग़ैर-समझ मिटाना ही एक मेरा धर्म नहीं है क्या?

८-४-४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

हम क्या मानें? हमारी तारीफ, हमारी निंदा? दोनों
गलत हो सकते हैं. तब हमारा इनसाफ हम ही क्यों?
हमारे में भी तो काफी गलती पाई जाती है. हम कैसे
हैं सो तो ईश्वर ही जानता है. जो किया वह तो हमें कहना
नहीं है. अच्छा तो यह है कि हम अपने बारे में कुछ
जाने नहीं, माने नहीं. जैसे हैं वैसे हैं. जानने से उसे
मानने से हमें कुछ फायदा नहीं होने का. हमारा
धर्म पालन ही सच्ची बात है.

८-४-४८

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम हे राम पतित पावन सीताराम

हम क्या मानें ? हमारी तारीफ़, हमारी निंदा ? दोनों ग़लत हो सकते हैं। तब हमारा इनसाफ़ हम ही करें ? इस में भी तो काफ़ी ग़लती पाई जाती है। हम कैसे हैं सो तो ईश्वर ही जानता है, लेकिन वह तो हमें कहता नहीं है। अच्छा तो यह है कि हम अपने बारे में कुछ जाने नहीं, माने नहीं। जैसे हैं वैसे हैं। जानने से और मानने से हमें कुछ फ़ायदा नहीं पहोंचता। हमारा धर्म पालन ही सच्ची बात है।

९-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

हे राम

पतित पावन सीताराम

अंधा वह नहीं जिसकी आंख फुट गई है।
अंधा वह है जो अपने दोष ढांकता है।

१०-४-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

अंधा वह नहीं जिसकी आंख फुट गई है।
अंधा वह है जो अपने दोष ढांकता है।

१०–४–४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ राम
पतित पावन सीताराम

मनुष्य की शांति की कसौटी समाज में ही हो सकती है, हिमालय की चोटी पर नहीं।
२१-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापु के आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

मनुष्य की शांति की कसौटी समाज में ही हो सकती है, हिमालय की टोच पर नहीं ।

११-४-४५

ॐ राम
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
अहिंसा एक वस्तु है, उसका पालन बिलकुल दूसरी वस्तु है।
सिमला १२.५-४६
२२-५-४६
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

आदर्श एक वस्तु है, उसका पालन
बिलकुल दूसरी वस्तु है।

(लिखा : १५–४–४५)
१२–४–४५

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

सिवाय आदर्श के मनुष्य सुखान रहित
जहाज़ के जैसा है ।

(लिखा : १५-४-४५)
१३-४-४५

मेरे पास आदमी है ऐसा नहीं कहा जाय
सब मैं उस पहुंचने की कोशीश
करता हूं.

किसोदपुर-४-४६ १४-४-४६

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
मेरे पास आदर्श है, ऐसे तब ही कहा जाय
जब मैं उसे पहुंचने की कोशिश करता हूँ।
(लिखा : १५–४–४५)
१४–४–४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम — हे राम — पतित पावन सीताराम

इन कांग्रेसवालों से संतुष्ट रहूं बशर्ते कि कांग्रेस
सही और पक्की शांति हो. परिणाम सिर्फ कांग्रेस
पर निर्भर नहीं रहता. और चीजें होती हैं जिन
पर हमारा कोई अंकुश नहीं होता.

१२-४-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

हम कोशिश से संतुष्ट रहें, बशर्तेकि
कोशिश सही और यथाशक्ति हो ।
परिणाम सिर्फ़ कोशिश पर निर्भर नहीं
रहता । और चीज़ें होती हैं जिस पर
हमारा कोई अंकुश नहीं होता ।

१५-४-४५

सही कोशीश किसे कहें? एक बात यह है कि
सही कोशीशका बहुत वक्त हमें इच्छित फल मिलता
है. इस लिये फल से ही कहा जाय कि कोशीश सही
थी. लेकिन अनुभवसे मालूम होता है ऐसे हमेशा
नहीं बनता. सही कोशीश यह है कि साधन की
शुद्धता के बारेमें निश्चय है और विपरीत फल
दिखने पर भी साधन बदलता नहीं; श्रद्धा
बढ़ती है या कम होती है.

१६-४-४५

सही कोशिश किसे कहें ? एक बात यह है कि सही कोशिश से बहुत वक्त हमें इच्छित फल मिलता है । इसलिये फल से ही कहा जाता है कोशिश सही थी । लेकिन अनुभव से मालूम होता है ऐसे हमेशा नहीं बनता । सही कोशिश यह है कि साधन की योग्यता के बारे में निश्चय है और विपरीत फल देखने पर भी साधन बदलता नहीं, न उद्यम बदलता है या कम होता है ।

१६-४-४५

यथाशक्ति किसको कहें? जिससे मनुष्य अपनी सब शक्ति व जोर संकल्पको एकत्रित करता है. ऐसे शुभ प्रयत्नमें सफलता प्रायः होती है.

बापु

यथाशक्ति किसे कहें ? जिससे मनुष्य अपनी सब शक्ति बग़ैर संकोच के ख़र्च करता है। ऐसे शुभ प्रयत्न में सफलता प्रायः होती है ।

१७–४–४५

रघुपति राघव राजाराम — ॐ राम — पतित पावन सीताराम

मनुष्य अपने निर्णय नहिंवत् भगवानको आधारभूत
कर के करता है और उसपर चलता है। ऐसी
हालत में अच्छा है कि जहांतक बन सके कुछ
निर्णय करना नहीं और परिणाम के बारे में
तटस्थ रहना। निर्णय करने का धर्म बन जाता है
तब ईश्वर का ध्यान धर कर ही निर्णय करना
और निडरता से अमल करना।

१८-४-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

मनुष्य अपने निर्णय नहिंवत् प्रमाण को आचारभूत करके करता है और उसी पर चलता है। ऐसी हालत में अच्छा है कि जहां तक बन सके कुछ निर्णय करना नहीं और परिणाम के बारे में तटस्थ रहना। निर्णय करने का धर्म बन जाता है, तब पूरी सावधानी रख कर ही निर्णय करना और निडरता से अमल करना।

१८-४-४५

असंगत ऐसी मोटी वस्तु छोटी लगती है, और सुसंगत जैसी सब से छोटी वस्तु का इतना ही स्थान है जैसा मोटी का।

१९-४-४५

परिशिष्ट

१

वृक्षन् से मत ले, मन तू वृक्षन् से मत ले ।
काटे वाको क्रोध न करही,
सींचे न करहि स्नेह ... वृक्ष०
धूप सहत अपने शिर ऊपर,
और को छांह करेत ।
जो वाही को पत्थर चलाय,
ताहि को फल देत ... वृक्ष०
धन्य धन्य ऐ परोपकारी,
वृथा मनुष्य की देह ।
सूरदास प्रभु कहँ लग बरनौ,
हरिजन की मत ले ... वृक्ष०

२

अब हौं कासों बैर करौं ?
कहत पुकारत प्रभु निज मुख ते ।
"घट घट हौं बिहरौं" ॥ध्रु०॥
आपु समान सबै जग लेखौं ।
भक्तन अधिक डरौं ॥
श्रीहरीदास कृपा ते हरि की ।
नित निर्भय बिचरौं ॥१॥
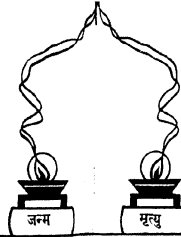
बहारे बाग़ दुनिया
है बहारे बाग़ दुनिया चंद रोज़!
देख लो इसका तमाशा चंद रोज़॥
ऐ मुसाफ़िर! कूच का सामान कर।
इस जहाँ में है बसेरा चंद रोज़॥
पूछा लुक़माँ से : "जिया तू कितने रोज़?"
दस्ते हसरत मलके बोला: "चंद रोज़"॥
बाद मदफ़न क़बर में बोली क़ज़ा।
"अब यहांपे सोते रहना चंद रोज़"॥
फिर तुम कहां औ' मैं कहां, ऐ दोस्तो!
साथ है मेरा तुम्हारा चंद रोज़॥
क्यों सताते हो दिले बेजुर्म को।
ज़ालिमो! है यह ज़माना चंद रोज़॥
याद कर तू ऐ नज़ीर क़बरों के रोज़।
ज़िन्दगी का है भरोसा चंद रोज़॥
जन्म
मृत्यु
२ अकतूबर १८६९ : ३० जनवरी १९४८
नाम जपन
नाम जपन क्यों छोड़ दिया?
क्रोध न छोड़ा, झूठ न छोड़ा,
सत्यवचन क्यों छोड़ दिया? ॥ ध्रु० ॥
झूठे जग में दिल ललचाकर,
असल वतन क्यों छोड़ दिया?
कौड़ी को तो खूब सम्हाला,
लाल रतन क्यों छोड़ दिया? ॥ १ ॥
जिहि सुमिरन ते अति सुख पावे,
सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया?
खालस इक भगवान भरोसे,
तन, मन, धन क्यों न छोड़ दिया? ॥ २ ॥